बिहार में नहीं गलेगी मोदी जी का दाल

पटना से विशेष प्रतिनिधि

बिहार विधानसभा चुनाव में मतदान का तीसरा चरण पूरा हो गया। अब दो चरण और बाकी हैं। इसके बाद फैसला आ जाएगा कि बिहार में भगवा या लालू-नीतीश। बिहार विधानसभा चुनाव महत्त्वपूर्ण इसलिए है कि इसी में इस बात का फैसला होना है कि देश में फासीवादी ताकतें राज करेंगी या तथाकथित मध्यममार्गी शक्तियां भगवा को राष्ट्रीय स्तर पर चुनौती दे सकेंगी। इस तरह, बिहार चुनाव उन लोगों के लिए उम्मीद की आखिरी किरण की तरह है, जिनका भरोसा जनतंत्र में है। यह अलग बात है कि यह जनतंत्र आदर्श नहीं हो सकता। लेकिन जहां कोई जनविकल्प मौजूद न हो और उसके निर्माण की दूर-दूर तक कोई संभावना नजर नहीं आ रही हो, वहां लालू.नीतीश की जोड़ी के पक्ष में जनतंत्रवादी हो रहे हैं, तो इसे अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता है।

सवाल है, क्या लालू.नीतीश दूध के धुले हैं, क्या नीतीश के राज में भ्रष्टाचार नहीं था, मंत्री कैमरे के सामने रिश्वत लेते पकड़े गए चुनाव के दौरान ही। क्या लालू का राज जंगल राज नहीं था, इससे कौन इन्कार करेगा। फिर क्या वजह है कि जिन लोगों की आस्था इस संविधान और जनतंत्र में है, वे महागठबंधन के पक्ष में हैं, इसका जवाब लगभग डेढ़ साल के मोदी जी के शासन में ही तलाशा जा सकता है। नरेंद्र मोदी के शासन में समाज में जो उपद्रव हो रहे हैं और जिस तरह की अशांति व्याप्त हो गई है, जिस तरह से अल्पसंख्यक समुदाय भय के साए में जीने को मजबूर हो चुका है, भ्रष्टाचार और महंगाई जिस तरह से चरम पर पहुंच गई है, वैसा पहले कभी नहीं देखा गया था। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भगवा मंडली ने पूरे देश में सांप्रदायिक तनाव पैदा करना शुरू कर दिया। जिस तरह के अभियान चलाए गए, उनके बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं है। अब तो साहित्यकारों से लेकर वैज्ञानिक और कलाकार भी इस सरकार के विरोध में खुल कर आ गए हैं। लोगों को समझ में आ रहा है कि विकास की बातें करने वाले मोदी जी का असली एजेंडा क्या है। उनका एजेंडा हिंदुत्व का है, देश के भगवाकरण का है, कुल मिला कर साम्राजी ताकतों के हाथों देश को नीलाम कर देने का है, क्योंकि आरएसएस वह ताकत है जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का सहयोग किया था और देश की आजादी के लिए लड़ने वालों के खिलाफ षड्यंत्र किया था। आरएसएस के षड्यंत्रकारी चरित्र से जो परिचित नहीं थे, मोदी जी के सत्ता संभालने के बाद वे भी इसके चरित्र को समझ गए। इसलिए आम आदमी का यह मानना है कि भ्रष्टाचार तो झेलना उनकी नियति रही है, पर अगर भाजपा को आगे बढ़ने से रोका नहीं गया तो देश में ऐसी अराजकता फैलेगी कि किसी का जीवन सुरक्षित नहीं रहेगा। गोमांस की राजनीति करने वाले और सूअर का मांस मस्जिदों में फेंकने की धमकी देने वाले ऐसे तत्व हैं जो समाजविरोधी हैं और इनका सत्ता में बना रहना आम आदमी के लिए खतरनाक है। यही वह भावना है, जो बिहार विधानसभा चुनाव में वोटरों के मन में है।

मोदी जी और उनके प्रमुख सहयोगी भाजपा अध्यक्ष अमित शाह खुल कर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति करते हैं। बिहार चुनाव प्रचार में भी यह ध्रुवीकरण करने की भरपूर कोशिश की गई। चुनाव प्रचार के दौरान मोदी जी ने यहां तक कहा कि लालू.नीतीश पिछड़े वर्ग के आरक्षण से कुछ हिस्सा छीनकर अल्पसंख्यक समुदाय को देना चाहते हैं और वे ऐसा कभी नहीं होने देंगे। इसके अलावा, अपने भाषणों में वे तमाम आपत्तिजनक बातें कहते रहते हैं, उनकी भाषण शैली काफी चर्चा का विषय बन चुकी है। लोग उनका मजाक उड़ाने लगे हैं। आज तक इस देश में ऐसा कोई प्रधानमंत्री नहीं हुआ जो केवल चुनाव प्रचार करता रहा हो। मोदी जी का वश चले तो वे पंचायत चुनाव में प्रचार करने निकल पड़ें, यह अब एक सामान्य आदमी कहने लगा है। विरोधियों पर घटिया तरीके से प्रहार करना, व्यक्तिगत टिप्पणी करना और मिमिक्री करना उनकी आदत बन गई है। उन्होंने प्रधानमंत्री पद की मर्यादा खत्म कर दी है। लेकिन इसकी वजह यह नहीं है कि वे कम पढ़े.लिखे हैं। कम पढ़े.लिखे नेता तो इस देश में बहुत हुए, मोदी जी का मानसिकता ही मवालियों वाली है। यही वजह है कि लालू यादव की बेटी मीसा के विरुद्ध वे घटिया टिप्पणी कर देते हैं। बहरहाल, राजनीतिक टिप्पणीकारों का मानना है कि बिहार में मोदी जी का दाल नहीं गलेगी और यहीं से राष्ट्रीय स्तर पर उनका पराभव शुरू होगा।

बिहार के वोटरों को यह बात समझ में आ गई है कि इस चुनाव में भ्रष्टाचार और जंगलराज मुद्दा नहीं है, असली मुद्दा है कि जनतंत्र बचेगा कि नहीं। अगर बिहार में मोदी जी की जीत होती है, तो जनतंत्र जो पहले से ही लूला.लंगड़ा है, दम तोड़ देगा और फासीवादी ताकतों के खुल कर खेलने के लिए मैदान साफहो जाएगा। गरीबों की अस्मत सुरक्षित नहीं रहेगी, अल्पसंख्यकों की दंगाई भीड़ द्वारा ईंट.पत्थर मार कर हत्या की जाएगी, हरिजनों को उनके घरों में ही जला दिया जाएगा। कमजोर वर्गों को मिलने वाला आरक्षण खत्म कर दिया जाएगा। इसलिए लोगों ने शायद जिसे मोदी जंगलराज कहते हैं, उसे बेहतर माना है। कम से कम इस जंगलराज में अल्पसंख्यक, ग़रीब और हरिजन तो सुरक्षित रहे। लालू और आगे चल कर नीतीश के राज में बिहार में सांप्रदायिक दंगे तो नहीं हुए। इस चुनाव के दौरान भी नहीं, जबिक मोदी और अमित शाह ने दंगे कराने की भरपूर कोशिश की। बिहार में दंगे नहीं हुए तो यूपी में दंगे कराए गए, ताकि कुछ तो ध्रुवीकरण हो। भूलना नहीं होगा कि लोकसभा चुनाव के पूर्व आरएसएस ने यूपी में बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण कर दंगे करवाए थे। दंगे ही मोदी राज की पहचान हैं। अल्पसंख्यकों को डरा.धमका कर और निम्न पिछड़ी जातियों में खौफ पैदा कर भाजपा पूरे देश पर राज करना चाहती है, फिलहाल कर भी रही है।

बिहार एक ऐसा राज्य है जो शुरू से ही देश की राजनीतिक दिशा.दशा तय करता आ रहा है। बिहार की जनता राजनीतिक रूप से काफी जागरूक है। जब पहली बार आडवाणी ने रामरथयात्रा निकाली थी तो उनके रथ को लालू ने बिहार में ही रोका था। इसी सांप्रदायिक रामरथयात्रा के कारण भाजपा केंद्र की सत्ता में आ सकी, लेकिन बाबरी मस्जिद विध्वंस भी हुआ जो इस देश के इतिहास पर ऐसा काला धब्बा है, जिसे मिटाया नहीं जा सकता। बाबरी का ध्वंस करने वाले इस देश की गंगा.जमुनी तहजीब का ध्वंस करना चाहते हैं। ये देश में हिंदू राज लाना चाहते हैं जिसमें अल्पसंख्यकों और पिछड़ों के लिए कोई जगह नहीं होगी।

लोगों का कहना है कि अब तक हुए मतदान में स्थितियां भाजपा के पक्ष में नहीं हैं। लोग मोदी के भाषणों का मजा ले रहे हैं। अमित शाह की मंडली में खलबली मची है। अब देखा ये जा रहा है कि हार का ठीकरा किस पर फोड़ा जाए। जो भी हो, चुनाव परिणाम की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, पर तीन चरणों के मतदान के आधार पर कहा जा सकता है कि अगले दो चरणों के मतदान में कोई चमत्कार हुआ या अतिमानवी शक्तियां मोदी जी के पक्ष में आ गईं, तभी वो चुनाव जीत सकते हैं।

इन्सान ने ही भगवान का निर्माण किया है . इसके सबूत हैं :

1. मनुष्य के अलावा दुनिया का एक भी प्राणी भगवान को नही मानता।
2. जहा इन्सान नही पहुँचा वहा एक भी मंदिर मस्जिद या चर्च नही मिला।
3. अलग.अलग जगहों पर अलग.अलग देवता हैं । इसका मतलब इन्सान को जैसी कल्पना सूझी वैसा भगवान बनाया गया।
4. दुनिया मे अनेक धर्म.पंथ और उनके अपने.अपने देवता हैं । इसका अर्थ भगवान भी एक नही।
5. दिन प्रतिदिन नये नये भगवान तैयार हो रहे हैं ।
6. अलग.अलग प्रार्थनायें हैं ।
7. माना तो भगवान नही तो पत्थर यह कहावत ऐसे ही नही बनी।
8. दुनिया मे देवताओं के अलग.अलग आकार और उनको प्रसन्न करने के लिए अलग.अलग पूजा।
9. अभी तक किसी इन्सान को भगवान मिलने के कोई प्रमाण नही है।
10. भगवान को मानने वाला और नही मानने वाला भी समान जिंदगी जीता है।
11. भगवान किसी का भी भला या बुरा नही कर सकता।
12. भगवान भ्रष्टाचार, अन्याय, चोरी, बलात्कार, आतंकवाद, अराजकता रोक नही सकता।
13. छोटे मासूम बच्चों पर बंदूक से गोलिया दागने वालों के हाथ भगवान नही पकड सकता।
14. मंदिर मठ आश्रम प्रार्थना स्थल जहा माना जाता है कि भगवान का वास होता है वहा भी बच्चे महिलाए सुरक्षित नही है।
15. मंदिर मस्जिद चर्च को गिराते समय एक भी भगवान ने सामने आकर विरोध नही किया।
16. बिना अभ्यास किये एक भी छात्र को भगवान ने पास किया हो ऐसा एक भी उदाहरण आज तक सुनने को नही मिला।
17. बहुत सारे भगवान ऐसे है जिनको 25 साल पहिले कोई नही जानता था। वह अब प्रख्यात भगवान हो गये हैं ।
18. खुद को भगवान समझने वाले अब जेल कि हवा खा रहे हैं ।
19. दुनिया मे करोडों लोग भगवान को नही मानते फिर भी वह सुख चैन से रह रहे हैं।

20 हिन्दू अल्लाह को नही मानते। मुस्लिम भगवान को नही मानते। इसाई भगवान और अल्लाह को नही मानते। हिन्दू मुस्लिम गाड को नही मानते। फिर भी भगवानों ने एक दूसरे को नही पूछा कि ऐसा क्यो।

21. एक धर्म कहता है कि भगवान का आकार नही। दूसरा भगवान को आकार देकर फैंसी कपड़े पहनता है, सच क्या है।
22. भगवान है तो लोगों मे उसका डर क्यों नही।

23 मांस भक्षण करने वाला भी जी रहा है और नही करने वाला भी जी रहा है।और जो दोनो खाता है वह भी जी रहा है।

23 अमेरिका भगवान को नही मानता फिर भी वह महासत्ता है।

24. हमारे यहा सर्वाधिक 33 कोटि देव, सर्वाधिक महाराज, अल्लाह, गाड, संत.महंत इनकी भरमार होने के बावजूद बारिश नही, गरीबी से मुक्ति नहीं, किसानों की आत्महत्या मे कोई कमी नही। बलात्कार, रोग, भ्रष्टाचार मे कोई कमी नही।

इन सभी चीजों का बारीकी से अभ्यास करने से साबित होता है कि मनुष्य को भगवान का कोई डर नही। इसके विपरीत भगवान ही डरे हुए हैं . क्योंकि भगवान का निर्माता मानव ही जब आचारसंहिता का पालन नही करता है तो बेचारे मानव निर्मित भगवान क्या कर सकते हैं।

गतांक की चीर-फ़ाड़

मज़दूर मोर्चा का 16-31 अक्टूबर 2015 का अंक मिला जिसमें राजनैतिक, प्रशासनिक, आर्थिक व सामाजिक मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण लेख पढने को मिले।

बिहार विधानसभा चुनाव अपने आप में अनेक विलक्षणताएं लिए हुए हैं। देश के इतिहास में शायद पहली बार किसी राज्य की विधानसभा का चुनाव इतनी बड़ी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना है। प्रधानमंत्री सहित उसका लगभग पूरा मंत्री मंडल बिहार में डेरा डाले हुए हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) व उससे सम्बन्धित सभी संस्थाएं चुनाव प्रचार में लगी हुई हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अकेले बिहार राज्य में ही 23 चुनावी रैलियों को सम्बोधित करना अपने आप में एक इतिहास है जब किसी प्रधानमंत्री ने एक राज्य में इतनी चुनावी सभाएं की हो। चुनावी लाभ लेने के लिये जाति, धर्म, गाय के नाम पर मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त चुनावी भाषणों का स्तर, निम्न स्तर पर पहुंच गया है और नफ़रत की भाषा में प्रचार किया जा रहा है तथा आपसी वैमनस्य फ़ैलाया जा रहा है। इसकी शुरूआत स्वयं प्रधानमंत्री मोदी ने की और उसका प्रत्युत्तर जेडीयू नेता नीतीश कुमार व आरजेडी नेता लालू प्रसाद यादव दे रहे हैं। बिहार की जनता के असली मुद्दे नेपथ्य में चले गए हैं। नरेन्द्र मोदी की शैली ओर विषय सामग्री ने प्रधानमंत्री पद की गरिमा को गिरा दिया है।

'चाय बेचने का तो क्या पता, देश बेचने में मोदी का सानी नहीं-बिहार में मोदी-मोदी नहीं, दिल्ली-दिल्ली होगा' तथा 'बिहार विधानसभा चुनाव:भगवा या नीतिश-लालू' लेखों में बिहार विधानसभा चुनाव के परिदृश्य का उचित विश्लेषण किया गया है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक आन्तरिक सर्वे के अनुसार पहले दो चरणों के चुनाव में महागठबंधन के मुकाबले भाजपा पिछड़ रही है। ग्रामीण, अर्द्ध-ग्रामीण क्षेत्रों, निम्न जातियों, गरीब वर्गों, महिलाओं आदि में महागठबंधन के पक्ष में सहानुभूति की खामोश लहर चल रही है जबकि नीतीश सरकार के विरुद्ध सत्ता विरोधी तथा नरेन्द्र मोदी के पक्ष में लोक सभा चुनाव वाली लहर नहीं है। लोकसभा चुनाव में जिस व्यक्ति ने मोदी की उम्मीदों के गुब्बारे में हवा भरी थी औरी मोदी के पक्ष में एक लहर तैयार करने में सहायता की थी, वही व्यक्ति प्रशांत किशोर अब बिहार में नीतीश कुमार की सहायता कर रहा है। उसका एक साल के अन्दर ही मोदी से मोहभंग हो गया और अब वह मोदी की संभावनाओं की हवा निकालने तथा उसको हटाने के लिये जुटा हुआ है। चुनाव में पराजय की आशंका से भाजपा ने नरेन्द्र मोदी व अमितशाह के पोस्टर हटाने शुरू कर दिए हैं जिससे कि पराजय का ठीकरा मोदी व शाह के सिर पर न फूटे । 25 अक्टूबर से की जा रही चुनावी सभाओं में मोदी के भाषणों से उनकी हताशा व बौखलाहट साफ़ नज़र आ रही है।

लेख 'खबरदार-बिहार में शासक अश्वमेध रथ पर निकले-लालू यादव से काल्पनिक साक्षात्कार' के जरिए नरेन्द्र मोदी व अमितशाह की चुनावी चालों और लालू पर लगाए जा रहे आरोपों का सही उत्तर दिया गया है।

मंदिर आस्था के केन्द्र होते हैं, परंतु मंदिरों में बढते चढावे और चौधराहट ने अब मंदिरों को राजनीति का अखाड़ा बना दिया है। मंदिरों की संपदा पर लार टपकने और समाज व अपनी बिरादरी में अपना रसूख कायम रखने के लिये लोगों में आपस में अक्सर टकराव होते हैं जिसका ज्वलंत उदाहरण है एनआईटी एक नम्बर स्थित श्री सिद्ध पीठ हनुमान मंदिर पर कब्जे के लिये राजेश भाटिया व जोगेन्द्र चावला के बीच चल रहा महाभारत। 'मंदिर पर कब्जे की लड़ाई, प्रशासक ने सत्ता हथियाई' लेख में इस महाभारत का पूरा खुलासा किया गया है। राजेश भाटिया की इच्छा के विरुद्ध मंदिर पर प्रशासन द्वारा प्रशासक नियुक्त करने पर इस लड़ाई में एक नया मोड़ आ गया है। राजेश भाटिया के पक्ष में ऑल इंडिया सनातन धर्म महावीर दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीच में कूद पड़े और उन्होंने राजेश भाटिया के घर पर एक बैठक करके हरियाणा सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि वह डेढ महिने के अंदर मंदिर से प्रशासक हटा ले अन्यथा राष्ट्रव्यापी आन्दोलन किया जाएगा।

लेख 'शासकों ने प्रदूषण को बनाया लूट-कमाई का धंधा' तथा 'सरकारी लूट के विरुद्ध ट्रांसपोर्ट हड़ताल' द्वारा प्रदूषण नियंत्रण का उचित समाधान बताया गया है। इस संबंध में ट्रांसपोर्टस द्वारा दिया गया सुझाव अत्यंत व्यावहारिक व उचित था कि सरकार को जितना टोल टैक्स के माध्यम से पैसा मिलता है उतना वह उनसे एक-मुश्त ले ले और टोल नाके हटा ले जिससे समय, धन व डीजल की बर्बादी नहीं होगी और प्रदूषण भी नियंत्रित रहेगा। परंतु सरकार को यह सुझाव रास नहीं आया क्योंकि इस उपाय से टोल वसूली की रकम से ठेकेदारों, नेताओं व अधिकारियों को मिलने वाला हिस्सा बंद हो जाता। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा व गडकरी ने कहा था कि उनकी सरकार बनने के बाद टोल नाके समाप्त कर देंगे।

परंतु इसके विपरीत टोल नाकों की संख्या में वृद्धि ही हुई है।

वाहवाही लूटने की जल्दी में स्त्री सुरक्षा के नाम पर महिला थानों की स्थापना की घोषणा की गई, परंतु इसकी व्यावहारिकता, उपयोग तथा महिला पुलिस कर्मियों की संख्या में कमी की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया। जितनी महिला पुलिस कर्मी उपलब्ध थी उन सब की महिला थानों में नियुक्ति कर दी गई, जिससे सामान्य पुलिस थाने स्त्रियों के लिये और भी असुविधाजनक बना दिए गए। इस समस्या का लेख 'स्त्री सुरक्षा और महिला थाना' में सटीक विश्लेषण किया गया है।

स्तम्भ 'तुर्की-ब-तुर्की-मेरे रहते शैतान लालू के पास-मोदी' के जरिये मोदी द्वारा बिहार में दिए गए भाषण ''मुझे हैरानी है कि शैतान को प्रवेश के लिये उनका (लालू) ही शरीर मिला। मैं जानता हूं कि शैतान को उनका पता कैसे मिला।'' मोदी के कार्यों के संबंध में उचित कटाक्ष किया गया है। अप्रत्यक्ष रूप से मोदी शायद यह कहना चाहते हैं कि उनके रहते शैतान लालू के पास कैसे चला गया?

'प्रधानमंत्री के नाम एलपीजी गैस उपभोक्ता का खुला पत्र' लेख द्वारा देशवासियों से गैस सब्सिडी छोड़ने के अपील के ढोंग का पूरा खुलासा किया गया है। मोदीजी अपने भाषणों में गैस सब्सिडी छोड़ने वाली की संख्या तो लाखों में बतातें हैं, परंतु यह नहीं बताते कि चूल्हे में लकड़ी जलाकर खाना पकाने वाले परिवार में से कितनों को गैस सिलेंडर दिए गए तथा उनमें से कितने लोग सिलेंडर में दूसरी बार गैस भरवा सके। अन्य प्रकाशित लेख प्रशंसनीय व उच्च स्तरीय है।

-प्रो. जुगल किशोर गुप्ता